॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

विष्णोः परम पदमव भाति भूरि। *(यजु० ६.३)*

विष्णु का परम पर बहुत अधिक प्रकाशमान है।

वर्ष ३२, अंक २८ **एक प्रति : ३ रुपये**

सोमवार १३ जुलाई, २००९ से १९ जुलाई, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

सार्वदेशिक सभा शताब्दी अधिवेशन एवं महासम्मेलन

दिनांक 29–30 अगस्त, 2009 (शनि–रवि) : दिल्ली

आर्यसमाज के दीर्घकालीन भविष्य के दृष्टिगत पारित किए जाएंगे अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव

देश–विदेश से आर्यजनों को हजारों की संख्या में पधारने का आह्वान

सार्वदेशिक सभा की स्थापना के अवसर पर प्रस्तुत हैं ऐतिहासिक तथ्य :– आर्यसमाज की स्थापना के बाद जब देशभर में आर्यसमाजों का जाल बिछना आरम्भ हो गया तब तत्कालीन आर्यसमाज के कर्णधारों ने यह विचारना आरम्भ किया कि इन आर्यसमाजों का एक संगठन बनाया जाए। तब प्रथम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, तत्पश्चात् संयुक्त प्रान्त (उ0प्र0) की आर्य प्रतिनिधि सभाओं का निर्माण हुआ। स्थापना के 25–30 वर्ष में ही आर्यसमाज देश–विदेश में व्याप्त संस्था बन गई। तब इसके अखिल विश्व के स्वरूप को बनाने का विचार आरम्भ हो गया। वस्तुतः इसका विचार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा 1875 में बम्बई की आर्यसमाज की स्थापनाकरते समय बनाए गए 28 नियमों में ही था, जिसका एक नियम था – ***"इस समाज में प्रतिदेश के मध्य एक प्रधान समाज होगा, और अन्य समाज शाखा–प्रशाखा होंगे।"***

इस धारा से यह स्पष्ट विदित होता है कि महर्षि के मन में आर्यसमाज के एक व्यापक संगठन बनाने की निश्चित धारणा थी।

महर्षि के देहावसान के पश्चात 1884 ई0 में देश भर के आर्य समाजों को पत्र लिख कर यह प्रेरणा की गई थी कि सम्पूर्ण देश का एक प्रधान समाज बनाया जाय। न्यायमूर्ति श्रीयुत गोविन्द रानाडे ने परोपकारिणी सभा में यह प्रस्ताव उपस्थित किया था कि देश भर के आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की एक सभा बनाई जाय और भविष्य में परोपकारिणी के स्थान रिक्त होने पर न्यून से न्यून आधे प्रतिनिधि केन्द्रीय सभा के हुआ करें। इस प्रकार देश भर की केन्द्रीय प्रतिनिधि सभा बनाने का विचार चर्चा के रुप में आर्यसमाज के सामने प्रारम्भ से ही विद्यमान रहा। उस चर्चा को सन् 1900 में स्थूल रुप मिला जब भारत धर्म महामण्डल के उत्सव होता रहा कि अब यथासम्भव शीघ्र देश भर के प्रतिनिधियों की सभा बननी चाहिए। अन्त में प्रस्ताव स्वीकृत

– शेष पृष्ठ 3 पर

सार्वदेशिक सभा शताब्दी समारोह : 29–30 अगस्त

विस्तृत कार्यक्रम : शनिवार 29 अगस्त, 2009

कार्यकारिणी बैठक : प्रातः 9.00 बजे **स्थान :** आर्यसमाज हनुमान रोड

अन्तरंग सभा बैठक : प्रातः 11.00 बजे **स्थान :** आर्यसमाज हनुमान रोड

सार्वदेशिक शताब्दी साधारण सभा अधिवेशन

समय : दोपहर : 3 से सायं 6 बजे **भजन संध्या :** रात्रि 8.00 बजे से

रविवार 30 अगस्त, 2009

सार्वदेशिक सभा शताब्दी महासम्मेलन

यज्ञ : प्रातः 9.00 बजे **ध्वजारोहण :** प्रातः 10.30 बजे

सम्मेलन आरम्भ : प्रातः 11 बजे

इस अवसर पर विभिन्न संगठनात्मक विषयों पर गोष्ठियां एवं चर्चाएं भी होंगी।

आप सब अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

–: निवेदक :–

कै. देवरत्न आर्य	आनन्द कुमार आर्य	प्रकाश आर्य	अनिल तनेजा
प्रधान	का. प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा– कैम्प कार्यालय – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1

आर्यसमाज के गत 40 वर्षों का होगा इतिहास लेखन

डॉ. भवानी लाल भारतीय की अध्यक्षता में समिति का गठन

डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री, डॉ. कुशल देव शास्त्री, डॉ. सुरेन्द्र कुमार की चार सदस्यीय समिति करेगी ऐतिहासिक कार्य आरम्भ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने शताब्दी के अवसर पर एक बड़ा फैसला लेते हुए घोषणा की कि आर्यसमाज का गत 40 वर्षों का इतिहास लिपिबद्ध किया जाएगा। सबसे प्रथम आर्यसमाज का इतिहास सन् 1957 में पं. इन्द्र विद्या वाचस्पति जी द्वारा लेखबद्ध करके दो भागों में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित किया गया था। उस इतिहास में आर्यसमाज की तत्कालीन परिस्थितियों को जबरदस्त वर्णन मिलता है। इतिहास किसी भी संगठनका गौरवमय हिस्सा होता है। स्पष्ट है कि उपरोक्त इतिहास सन् 55 तक की घटनाओं का वर्णन करता होगा। इसके पश्चात् डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार जी ने अत्यधिक परिश्रम करके सन् 70 के दशक में पुनः आर्यसमाज के इतिहास लेखन का कार्य सम्पन्न करके उसे प्रकाशित किया। किन्तु 70 के दशक के पश्चात् यह कार्य आगे नहीं बढ़ सका। कै. देवरत्न आर्य जी ने इस विषय पर विद्वानों से सम्पर्क किया तथा उन्हें इसकी आवश्यकता से अवगत कराते हुए उनसे निवेदन किया कि वे इस इस महत्तर कार्य को अपने कन्धों पर लेना स्वीकार करें, जिसकी सहर्ष स्वीकृति उन्होंने प्रदान की। हर्ष का विषय है कि सभी विद्वान् आर्यजगत् के उच्च कोटि के विद्वान हैं तथा इस कार्य में उनका अपना विशेष अनुभव है। तत्पश्चात् सभा प्रधान जी ने सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा में प्रस्ताव रखा तथा अन्तरंग सभा ने सहर्ष स्वीकृति देते हुए इसके लिए धान आदि की व्यवस्था करने की बात भी की। अतः निश्चित रूप से यह ऐतिहासिक अवसर है कि पुनः इतिहास लेखन का कार्य आरम्भ हो रहा है।

– प्रकाश आर्य, मन्त्री सार्वदेशिक सभा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2009 सूरीनाम – 26 से 29 सितम्बर, 2009

दिल्ली में सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन– 2006 के बाद में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्यसमाज में जो उत्साह आया उसी के परिणाम के अन्तर्गत अमेरिका में, मॉरीशस में विशाल आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हुए हैं। उसी श्रृंखला में इस वर्ष का आर्य महासम्मेलन दक्षिण अमेरिकी देश सूरीनाम में विशाल स्तर पर आयोजित होनेजा रहा है। जिसमें अनेक देशों के महानुभाव पुनः एकत्र होकर आर्यसमाज के आगामी कार्यक्रमों पर अपने विचार रखेंगे। सम्मेलन आयोजकों द्वारा तय किया गया सम्मेलन का लक्ष्य – ***Towards a Bright future : With respect and Dignity*** इसी के साथ सम्मेलन के उप विषय भी निर्धारित कर दिए गए हैं। विस्तृत जाकारी एवं पूर्ण कार्यक्रम www.delhisabha.com; www.mahasammelan2009suriname.org; www.aryamahasammelan.com पर उपलब्ध है।

– राजदेन खेडो, अध्यक्ष

सम्मेलन में भाग लेने वालों हेतु सूचना अगले अंक में प्रकाशित होगी।

दर्शन व्याख्या - 13

न्याय दर्शन के प्रथम अध्याय का परिचय

गतांक से आगे :–

महर्षि मेधातिथि (गौतम) विरचित 'न्याय दर्शन' का प्रथम अध्याय दो आह्निकों में विभक्त है। इसके प्रथम आहनिक में 41 सूत्र और द्वितीय आह्निक में20 सूत्र हैं। इस प्रकार कुल मिला कर इस अध्याय में 61 सूत्र हैं न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाण, प्रमेय संशय, प्रयोजन,दृष्टान्त, सिद्धांत आदि सोलह पदार्थो के यथार्थ ज्ञान (तत्वज्ञान) से निःश्रेयस (मोक्ष) की प्राप्ति होती है। दुःख का मूल कारण मिथ्या ज्ञान है और दुःखों के नाश, क्रर्म में अप्रवृत्ति जिससे प्रारब्ध बने ही नहीं और मोक्ष की प्राप्ति का साधन षोडश पदार्थों का यथार्थ ज्ञान(तत्व ज्ञान) है। इस अध्याय में मोक्ष प्राप्ति के उपाय के रूप में सोलह पदार्थो के यथार्थ ज्ञान के उल्लेख के उपरान्त चार प्रमाणों–प्रत्याक्ष अनुमान, उपमान और शब्द प्रमाणों से जानी जाने वाली बारह वस्तुओं–आत्मा, शरीर, इन्द्रियों, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुःख, और अपवर्ग (मोक्ष); संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त सिद्धांत, अवयव, तर्क, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रह और निग्रह–स्थान का भेदोपभेद सहित सोदाहरण विवेचन किया गया है, जिससे साधक (अध्येता) को इन अवधारणाओं को हृदयंगम करने में कोई कठिनाई नहीं होती।

न्याय दर्शन के प्रथम सूत्र में वर्णित (उल्लिखित) सोलह पदार्थः न्याय दर्शन के प्रथम अध्याय के प्रथम आह्निक का पहला सूत्र है– 'प्रमाण– प्रमेयसंशय प्रयोजन दृष्टान्त सिद्धांतावयव तर्क निर्णयवाद जल्प वितण्डाहेत्वाभासछलजाति निग्रहस्थानां तत्वज्ञानान्निः श्रेयाधिगमः। (न्याय 1–1–1) इस सूत्र में उन सोलह पदार्थो का उल्लेख हुआ है जिनके यथार्थ ज्ञान (तत्व ज्ञान) से निःश्रेयस (मोक्ष) की प्राप्ति होती है। वे षोडश (सोलह) पदार्थ है– 1. प्रमाण 2. प्रमेय 3. संशय 4. प्रयोजन 5. दृष्टान्त 6. सिद्धांत 7. अवयव 8. तर्क 9. निर्णय 10. वाद 11. जल्प 12. वितण्डा 13. हेत्वाभास 14. छल 15. जाति और 16. निग्रहस्थान न्याय दर्शन का यह प्रथम सूत्र मूल है तथा शेष सारे सूत्र उसे व्याख्यायित करने, समझाने का उपक्रम हैं। इन सोलह पदार्थों का अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन निम्नस्थ हैः– 1. प्रमाणः प्रमाण का संबंध अर्थ के यथार्थ ज्ञान से है। यह किसी विषय या वस्तु की यथार्थ जानकारी प्राप्त करने का साधन या उपाय है। न्याय दर्शन में जिन चार प्रमाणों को मान्यता दी गयी है,वे हैं –प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्),
बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली–110058 **क्रमशः**

Questions & Answers

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q.: I am 8th month pregnant and want to know that can I keep karva chauth vrat or is there any different custom for the pregnant women. **Rashi**

Ans.: Karvachauth is not necessary now please. Some good advices for pregnant ladies are included on this website. Please refer there.

Q.: I think Mughal invasion was Bhagwan's leela to punish people who were supposed to follow sanatan dharma religiously. Ram's mandir demolition happened because we people stopped following rules] we should have followed. All this terrorism and 'abusings' we bore, the forceful conversion and now living in our own country like minorities although we are in 'majority'. I think we are being punished for not following our dharma while performing our karma . We are being punched and forced to live in Kaliyug . If I am wrong? Tell me why. **Puja**

Ans.: When sun arises, then the darkness of night is over and there is no other alternative. We have been forgetting our eternal religion i.e., four Vedas. So we are mostly in illusion (darkness), and therefore we are paying the price. now we must study Vedas again for a long & happy life.

Q.: What should one do about losing concentration, health and confidence?**Madhu**

Ans.: My blessings to you and I pray God for your early recovery. You must awake early in the morning about 4 o'clock or at least 5 o'clock. Then after going to bath must do holy name jaap of God daily. Then do long morning walk and light exercises. Must take at least 10 glasses of water daily. Please learn at least 10 yaga asan, pranayaam and meditation. If possible you may come here for as much time as you can devote to learn correct procedure of yoga philosophy, otherwise learn locally. Do daily Gayatri mantra jaap. Read daily newspaper carefully and good magazines also and discuss the current affairs within family members, as well as outside. Try to do daily havan from Gayatri mantra. Avoid negative thinking. Adopt vegetarianism. Consume more fruits/ Juice/Salad. Water should be taken half an hour before/after your lunch/ supper.

To be continued....

देववाणी : संस्कृत

संस्कृत भाषाः

प्राचीनात् अपि कालात् अस्मिन् आधुनिक–काले एवं संस्कृत भाषायाः आवश्यकता अधिकतरा अस्तीति मम चिन्तनम्। यतो हि संस्कृतभाषायां यादृग् वैविध्यपूर्ण ज्ञानम् उपलभ्यते, तादृम् गंभीर चिन्तनपूर्ण ज्ञानं अन्यस्यां कस्यांचित् अपि भाषायां कथमपि नोपलभ्यते।

संस्कृतभाषा विश्वस्थाभ्यः सर्वाभ्यो भाषाभ्यः प्राचीनतमा अस्ति। तथापि संस्कृत भाषा विश्वेषां मानवानां सकलभावानाम् अभिव्यक्तौ सुसमर्था, सुललिता, सुपूर्णा, व्याकरणेन सुबद्धा चास्ति। कालजयिनी खलु इयं दववाणी । शुभ्र मञ्जुल मनोहर नीरवती गंगेव सततं प्रवहतीयं संस्कृतभाषापि।

इयमेव खलु विश्वासायम् अन्यासाम् भाषाणां जननी। अतः अस्मिन्नपि आथुनिककाले विश्वस्थायाः कस्याश्चिदपि भाषायाः तुलनात्मकाहययने संस्कृतभाषायाः सम्यक् ज्ञानं अनिवार्यमेव।

अस्याः संस्कृत भाषायाः ज्ञानेन बिना सकलानां भाषाणां शब्दानां मूलानि ज्ञातुं कदापि न शक्यन्ते।

अस्मिन् आधुनिकेऽपि काले सकलासु अपि भाषासु यानि ज्ञानानि उपलभ्यन्ते, तेषां सर्वकल्पानाम् ज्ञानानां वर्णनं प्राचीनतमायामपि अस्यां संस्कृत भाषायां कुत्रचित् विस्तारेण कुत्रचिच्च संक्षेपेण दरीदृश्यते।

नवीनानां, नवीनतराणां नवीनतमांनां च यौगिकानां शब्दानां निर्माणेऽस्यां भाषायां यादृग् सौलभ्यं वर्तते तथा नेतरासु भाषासु। स्वल्पेष्वेव शब्देषु भावसुव्यक्तीकरणे निपुणतमा इयं भाषा। अत्यधिकेभ्यः क्रियावाचिभ्यः शब्देभ्यः ससमृद्धतमेयं सुरवाणी।

मनुष्याणां कृते ऐहिकस्य, आमुष्मिकस्य वा यस्य कस्यापि ज्ञानस्य आवश्यकता भवति तत्सर्वमेव ज्ञानम् अस्यां भाषायां सुग्रथितम् अस्ति।

1. मनुन्यसमाजस्य दण्डविधानम् कर्तव्याकर्तव्यकर्मणां निरुपणम् करग्रहणम इत्यादीनाम् सर्वेषां सामाजिकनियमानाम् कृते मनुस्मृतिः अवश्यम् अध्येया। 2. शब्दोत्पति आरभ्य तत्स्वरुप, विकास, विलासज्ञानार्थ मुनित्रयस्य व्याकरणं यास्कमुनि विरचित निरुक्तं च सुतरां विद्येते। 3. सृष्टिस्थ सकल रोगाणाम् उपशमनार्थभ् आयुर्वेद अवश्य ज्ञेयः। 4. सकल सरस संगीत ज्ञानार्थं गन्धर्ववेदः, समस्त शस्त्रास्त्रबोधाय सकल युद्धव्यूहा रचन ज्ञानार्थं च धनुर्वेदः विश्वकलाकौशल अग्निविद्या यन्त्रज्ञानप्रतीतये शिल्पवेदः संस्कृत भाषायामेव विद्यन्ते। 5. कला हृदयानां साहित्य मकरन्द जोजुषां च कृते विपुलो विमल सलिल ललित साहित्य सागरोः अस्यां भाषायां विद्यमानोऽस्ति। 6. गंभीर चिन्तन तरंग माला मग्नानां कृते षड् दर्शनानि सन्ति। 7. विस्क्तानां ब्रह्मानन्द रसकामानां कृते उपनिषदः। 8. आलसानामपि महदालस्यं दूरीकर्तु भगवदगीता। 9. ऐतिह्यम् अस्माकं पुरतः प्रस्तोतुं, रामायणमहाभारते। 10. मनोविनादार्थम् अपूर्वाणी काव्यानि। 11. समस्तं कर्मकाण्ड अवबोधयितुं कल्पशास्त्रम्। 12. खगोल विद्या सम्यग्ज्ञानार्थ ज्योतिषम्। 13. गणित विद्या ज्ञानार्थं वैदिक गणितम्।14. भौतिक विज्ञान अणुपरमाणु समस्त तत्वानां ज्ञानार्थ न्याय वैशेषिके। 15. परमात्म परमानन्द प्राप्तये योगदर्शनम्। 16. रसायन सूक्ष्मज्ञानार्थ पुनशयायुर्वेदः।

– आचार्य हरि प्रसाद

बोध कथा

जीवात्मा की कहानी

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

आत्मा क्या है? इसके सम्बन्ध में महर्षि नारद की सुनाई एक कहानी सुनिये। किसी समय में पुरंजन नाम का एक राजा था। एक बार उसे इच्छा हुई कि किसी नगर में जाकर रहूँ। उसने कई नगर उसने देखे, कोई भी उसे पसन्द नहीं आया। तब हिमालय के दक्षिण में उसने एक नौ द्वारों वाली नगरी देखी। यह भी देखा कि उस नगरी में एक सुन्दरी भी रहती है। पाँच फन वाला एक सर्प सदा उसकी रक्षा करता है। उस स्त्री ने भी पुरंजन राजा को देखा। दोनों एक–दूसरे को देखते ही एक दूसरे पर मोहित हो गये। पुरंजन राजा उस नगरी में गया । उस स्त्री ने उसको अपना स्वामी बना लिया। दोनों इस नगरी में रहने लगे। रहते रहते वर्षो व्यतीत हो गए। इनके कितने ही बच्चे भी हुए। तब अन्त में पुरंजन का शरीर ढीला होने लगा। कितने ही रोगों ने उसे दबा लिया। तब एक दिन दुःखी होकर उसने वह नगरी छोड़ दी। यह सारी कथा वास्तव में आत्मा की कहानी है, क्योंकि पुरंजन राजा कोई दूसरा राजा नहीं, यही आत्मा है और नौ द्वारों वाली जिस नगरी में आकर उसने निवास किया, वह नौ द्वारों और आठ चकों वाला यह मानव शरीर है। वेद भगवान ने इस नगरी का वर्णन करते हुए कहाः–

अष्ट चका नव द्वारा देवानां पूरयोध या। तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।

आठ चकों और नौ द्वारों वाली यह वह पुरी है, जिसे कोई जीत नहीं सकता। इसमें एक चमकते हुए प्रकाश में परमात्मा के प्रकाश से आवृत वह आत्मा बैठा रहता है, जो अपने आप में सुख रूप है।

जिस नगरी का वेद भगवान ने वर्णन किया है, वह मनुष्य का यह शरीर है। इसके नौ द्वार हैं– दो आँखे, दो कान, दो नथुने, एक मुख और मल और मूत्र त्यागने के द्वार। यह है नौ द्वारों वाली अयोध्या नगरी। इसमें आठ चक्र हैं– मुलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपूरक चक्र, अनाहद चक्र, हृदय चक्र, विशुद्धि चक्र, आज्ञाचक्र, ब्रह्मचक्र। इस नौ द्वारों और आठ चक्रों वाली नगरी में बुद्धि नामक सुन्दर स्त्री रहती हैं। दस इन्द्रियाँ उसके दस सेवक हैं और पाँच प्राण–पाँच फनों वाला वह सर्प है, जो इस नगरी की रक्षा करता है। – ***क्रमशः***

प्रथम पृष्ठ का शेष

सार्वदेशिक सभा शताब्दी अधिवेशन.....

हुआ और कार्यरुप में परिणत करने के लिए निम्नलिखित सज्जनों की अनौपचारिक समिति बनाई गईः–

1. पं. भगवानदीन जी (लखीमपुर)
2. श्री मंशीराम जी (जालन्धर)
3. पं. वन्शीधर जी शर्मा (अजमेर)
4. पं. काशीराम तिवारी (मध्यप्रदेश)
5. मुं. नारायण प्रसाद जी (मुरादाबाद)
6. ला. रामकृष्ण जी वकील (जालन्धर)

इस समिति के कई अधिवेशन हुए, उनमें नियमों पर विचार होता रहा। ड्राफ्ट बने और रद्द हुए। अन्त में 1908 के मार्च महीने में गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर समिति का निश्चायक अधिवेशन हुआ। उस अधिवेशन में आगरे के बा. श्रीराम जी भी भाग लेते रहे। उसमें सभा को रुप–रेखा तैयार करने के लिए लगभग एक समिति बन गई और निश्चय हुआ कि समिति का अगला अधिवेशन आगरे में किया जाय जिस में केन्द्रीय सभा की स्थापना का अन्तिम निर्णय किया जाय। तदनुसार 25 सितम्बर 1908 को आगरा में समिति के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य भी अनेक महानुभाव सम्मिलित हुए। उपस्थिति निम्नलिखित थीः–

1. पं. भगवानदीन जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्त प्रान्त।
2. लाला रामकृष्ण जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब।
3. कुंवर हुकमसिंह जी, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश।
4. पं. काशीराम जी तिवारी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य प्रदेश।
5. बाबू मिथिला शरण सिंह जी, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल तथा बिहार।
6. महात्मा मंशीराम जी, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी।

इनके अतिरिक्त 6 अन्य प्रतिष्ठित आर्य महानुभाव समिति के अधिवेशन में सम्मिलित थे। समिति में निम्नलिखित निश्चय किये गयेः–

1. सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि आर्यावर्तीय सार्वदेशिक सभा स्थापित की जावे।

2. आर्यावर्तीय सार्वदेशिक सभा के नियमों का ड्राफ्ट श्री पं. वंशीधर जी शर्मा एम. ए. के संशोधन सहित पढ़ा गया और बहुपक्षानुसार स्वीकृत हुआ।

3. सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि एक उपसमिति, निम्न महाशयों की बनाई जावे कि वे नियमों को मुद्रित कराके समस्त प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं में भेजें, इस आशय से कि वे अपने अपने प्रतिनिधि, अगामी माघ मासांत पर्यन्य निर्वाचन करके भेज देवें।

1. श्री पं. भगवानदीन जी
2. श्री कुंवर हुक्मसिंह जी
3. श्री डा. सुखदेव जी, भरतपुर

डा. सुखदेव जी इस उपसमिति के मन्त्री नियत हुए।

4 यह भी निश्चय हुआ कि उपर्युक्त रीति से संगठित सार्वदेशक सभा का प्रथम अधिवेशन दिल्ली में बुलाया जावे।

इस प्रकार अनौपचारिक समिति ने अपना कार्य पूरा कर दिया। नियमानुसार सार्वदेशिक सभा का पहला अधिवेशन 31 अगस्त, 1909 को देहली में हुआ। सभा के लिए प्रान्तों से 27 प्रतिनिधि चुने गय। उनका विवरण निम्नलिखित हैः–

1. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 7
2. आर्य प्रतिनिधि सभा सं. प्रान्त 7
3. आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान 4
4. आर्य प्र. सभा बंगाल–बिहार 4
5. आर्य प्र. सभा म.प्र. तथा विदर्भ 3
6. आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई 2

इस समिति के प्रधान पं. भगवानदीन जी थे। सभा के सबसे पहले प्रधान पं. वंशीधर शर्मा एम. ए., एल. एल. बी. चुने गए जो एक वर्ष तक प्रधान रहे। दूसरे वर्ष महात्मा मुन्शीराम जी प्रधान चुने गए जो सात वर्ष तक प्रधान रहे। पहले मन्त्री पं. भगवानदीन जी निर्वाचित हुए। उनके पश्चात् आठ वर्ष तक महाशय नारायण प्रसाद जी मन्त्री चुने गए।

इस प्रकार सभा की स्थापना 1908 में हुई और 25 अगस्त 1914 को 1860 ई0 के एक्ट संख्या 31 के अनुसार उसकी रजिस्ट्री हुई। प्रारम्भ में सार्वदेशिक सभा में प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधियों के सम्मिलित होने का ही नियम रक्खा गया था, पश्चात नियमों में परिवर्तन करके निम्नलिखित पाँच प्रकार के सदस्यों की व्यावस्था की गई।

प्रस्तुत विवरण पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित आर्यसमाज का इतिहास भाग–2 से उद्धृत है। इस ऐतिहासिक सन्दर्भ को पढ़कर मन प्रफुल्लित हो उठता है। हम सबका सौभाग्यहै कि हमारे जीवन में यह अवसर आ रहा है कि हम सब इस शताब्दी समारोह के गवाह होंगे। निश्चित रूप से शताब्दी के समय सार्वदेशिक सभा की स्थिति को लेकर अनेक बातें आर्यजनों के मन में होंगी। किन्तु हम इतना जरुर कहना चाहेंगे कि मन्थन के समय जो तकलीफ होती है, अमृत निकलने के पश्चात् वह महसूस नहीं होती। निश्चित रूप से अगली शताब्दी सार्वदेशिक सभा को उसके कर्त्तव्यों के प्रति और सजग करेगी और समय के साथ–साथ हम और मजबूत होंगे। जो कार्य सोचे गए, विचारे गए, किन्तु किन्हीं कारणों से नहीं हो सके, उन्हें अगली पीढ़ी आगामी शताब्दी में कर सकेगी, हम ऐसा माहौल बना पाएंगे, ऐसा हमें विश्वास है। आओ! इस शताब्दी समारोह में परिवार सहित भाग लें तथा इस अवसर पर होने वाली अनेक गोष्ठियों, चर्चाओं तथा सम्मेलनों में अपनी उपस्थित दर्ज कराकर संगठनको मजबूत करें। वस्तुतः संगठन ही आर्यसमाज की पहचान था, पहचान है और पहचान रहेगी।

– विनय आर्य, उपमन्त्री, सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली

सार्वदेशिक सभा शताब्दी महासम्मेलन एवं अधिवेशन

दिल्ली के बाहर से पधारने वाले महानुभावों के लिए सूचना

सभी सज्जन अपने आने की पूर्व सूचना तथा किस तिथि को पधार रहे हैं पत्र द्वारा सूचित कर दें ताकि उसके अनुरुप ठहरने एवं भोजनादि की व्यवस्था की जा सके।

★ सार्वदेशिक सभा के साधारण सभासदों को अलग से परिपत्र जारी किया जा रहा है। सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे अपना अभी से आरक्षण करवा लेवें। ★ सभी आर्य महानुभावों के दिल्ली में कार्यक्रम के दौरान आवास एवं भोजन की व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। ★ अपने अपने की सूचना हमारी ईमेल – aryasabha@yahoo.com परभी भेज सकते हैं।

सार्वदेशिक सभा के सन्दर्भ में ऐतिहासिक जानकारियां भेजें

सार्वदेशिक सभा शताब्दी समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के ऐतिहासिक सन्दर्भों की पुस्तक प्रकाशिता की जा रही है। जिन महानुभावों के पास सार्वदेशिक सभा से सम्बन्धित किसी ऐतिहासिक कार्यक्रमों के चित्र, रिपोर्टे, सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों से सम्बन्धित कोई घटना, सार्वदेशिक सभा के आन्दोलनों से सम्बन्धित भी कोई उपयोगी सामग्री हो तो कृपया उसे **"डॉ. सुरेन्द्र कुमार"** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली– 1** के पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

– प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

गतांक से आगे

मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद के सम्बन्ध में कुछ प्रसिद्ध सन्तों के विचार - 4

उस मूर्ति के नेत्रों को चूहे निकाल ले जाते, उसके कपड़े को काट कर ऊपर पेशाब करते और बिल्लियां नैवेद्य तक भी चट कर जाती हैं किन्तु वह मूर्ति है कि (इतना अपमान होने पर भी) अपनी आंख तक नहीं खोलती। अज्ञानी लोग ऐसी जड़ मूर्तियों को तो परमेश्वर कहते हैं किन्तु जो सच्चिदानन्द चेतन प्रभु है उसको जानते तक नहीं?

ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में लिखा कि प्राचीनकाल में मूर्तिपूजा नहीं थी, जब से विद्या का प्रचार बन्द हुआ और अविद्या ने लोगों के हृदयों पर बसेरा किया तभी से अज्ञानी लोगों ने एक चेतन प्रभु को छोड़कर पत्थरों को पूजना प्रारम्भ कर दिया। देखिये आज से ढ़ाई सौ साल पहिले के महात्मा तुकारामजी ऋषि के इस कथन को कितने प्रबल तथा स्पष्ट शब्दों में समर्थन करते हैं–

दगडाचे देव पूर्वी न्हवते जाण,
जन हे अज्ञान झाले जेव्हां।
जन हे अज्ञानी दगड़ा मानिले
गुरूसि त्यागिले मूढ़ पणें।
हजारों रूपये नासुनियी जाण,
मंदिरी पाषाण पूजिताती।
परी गुरू वीण ने पविति देवा,
करा त्याची सेवा तुकी म्हणे।

अर्थात् हे मनुष्यों! तुम यह निश्चय जानो कि पूर्वकाल में पत्थर के देव नहीं हुआ करते थे। जब मनुष्य विद्या का परित्याग कर अज्ञानी बन गये, तब इन अनाड़ी मूढ़ लोगों ने अपने मूढ़पन से सच्चे गुरू को छोड़कर पत्थरों को ही देव मान लिया। और हजारों रूपये नष्ट करके इन पत्थरों को मंदिरों में पूजने लगे। आगे श्री महात्मा तुकारामजी ऐसे लोगों को उपदेश देते हुये कहते है– किन्तु (हे अज्ञानी लोगों) तुम सच्चे (ब्रह्मज्ञानी) गुरू के बिना उस प्रभु को नहीं पाओगें, इसलिये (इस पत्थर पूजा को छोड़कर) तुम सच्चे ब्रह्मज्ञानी गुरू की सेवा करो? पाठक देखें कि श्री तुकारामजी ने पूर्व काल में मूर्तिपूजा के न होने का कैसे सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है।

ऋषि दयानन्द ने बतलाया कि सच्ची पंचायतन पूजा पांच मूतियों की पूजा नहीं प्रत्युत जीवित माता,पिता, आचार्य, अतिथि, गुरू आदि का सत्कार करना ही सच्ची पंचायतन पूजा है और ऐसी पूजा से ही मनुष्य जीवन का कल्याण है। देखिये श्री तुकारामजी ऋषि की इस सत्याता को कैसी सुन्दरता से वर्णन करते हैं–

माता पिता आचार्य, अतिथि गुरू सचेतन मूर्ति।
त्याला शरण तूँ जासी, तरीच कल्याण पावसी।।

हे जीव! माता, पिता, आचार्य, अतिथि और गुरू ही पांच सचेतन मूर्तियां है। इनकी ही यदि तू शरण में जायेगा तब ही कल्याण पायेगा, अन्यथा नहीं।

भगवान् दयानन्द ने शतपथ ब्राह्मण के "विद्वासों ही देवाः" इस प्रमाण से हमें बताया कि जो विद्वान धर्मात्मा, सदाचारी, पुरूष है, वे ही सच्चे देव हैं, इनके अतिरिक्त अन्य कोई देवलोक निवासी कल्पित देव नहीं। देखिये महात्मा तुकाराम जी ऋषि के इस मन्तव्य को शपतथ ब्राह्मण के मंत्रों में ही कैसे सुन्दर तरीके से वर्णन करते है–

विद्वांसो हि देवा, त्यांची कोणी न करी सेवा।
व्याच्या बचनें जोडे ज्ञान, त्याला न भजे अज्ञान।
जस पूजूनि जड़ झाले, व्यर्थ जन्मुनियों में देव।

अर्थ विद्वान पुरूष ही सच्चे देव हैं, किन्तु शंका है कि उनकी कोई भी सेवा नहीं करता। जिन सदाचारी विद्वान के उपदेशामृत रूपी वचनों से मनुष्य को सच्चा ज्ञान मिलता है, अज्ञानी जन इन विद्वान महात्माओं का सेवन तो नहीं करते (प्रत्युत व्यर्थ मं जड़मूत्तियों की पूजा करने लगते हैं)। प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या कारण है कि

– क्रमशः

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय-द्वितीय पादः (40)

करणवच्चेन्न भोगा दिभ्यः ।। 40।।

अर्थ– (करणवत्) इंद्रिय आदि करणों वाला (चेत) आदि उसे मानो तो (न) ऐसी बात नहीं है (भोगादिभ्यः) भोगादि के फलों को भोगने के कारण।

भावार्थ – यदि परब्रह्म परमात्मा को शरीर और इंद्रियों से युक्त मानोंगे तो वह बात संगत नहीं है। क्योंकि ऐसा मानने पर वह शुभाशुभ, अच्छे–बुरे कर्मो को करने वाला और उनके फलों को भोगने वाला हो जाएगा। शरीर का अस्तित्व चेतन कर्ता (जीवात्मा) के कर्मो व योग के लिए होता है । और इंद्रियों उन कर्मो के करने की मुख्य साघन हैं। यदि ब्रह्म का शरीर इंद्रियोंवाला हो तो उसके शुभाशुभ कर्म और उनके फलों का भोक्ता जीव है, न कि ब्रह्म। योगदर्शन के समाधिपाद के सूत्र 28 में कहा है–

"क्लेश कर्म विपाकाशयैर परिभृष्टः पुरूष विशेष ईश्वरः।"

अर्थात क्लेश (अविद्या) अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश), कर्म (शुभ, अशुभ, मिश्रित), विपाकर (कर्मफल) आशय (कर्म संस्कारों का समुदाय) इनसे असंबंधित जो पुरूष विशेष है, वह ईश्वर है।

हाँ यदि कहें कि ब्रह्म के शुभाशुभ कर्म व सुख–दुख आदि की संभावना न होने से उसके शरीर में इंद्रियों को मानने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि शरीर मानने पर भोगादि दोष से उसे मुक्त नहीं माना जा सकता। अतः सिद्ध होता है कि ईश्वर (ब्रह्म) को शरीरी और इंद्रियों वाला मानना असंगत है

अगले सूत्र में सूत्रकार ब्रह्म को शरीर धारी मानने में आने वाले अन्य दोष दर्शाता है।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी,नई दिल्ली–58

देश–विदेश के वेद प्रेमी "वेशों" से भ्रमित न हों

"वेश–सम्प्रदाय द्वारा समलैंगिकता, अण्डा–मांस, आरक्षण, बाबरी समर्थन एवं मुस्लिम आतंकवाद के संरक्षण को आर्य–समाज का निर्णय अथवा देव दयानन्द का वैदिक सिद्धान्त न समझें"

अत्यन्त खेद का विषय है कि गत अनेक वर्षों से स्वामी अग्निवेश जी व उनके साथी आर्यसमाज एवं वेद के नाम पर देश–विदेश की जनता को भ्रमित कर रहे हैं। देव दयानन्द व आर्य समाज के श्रद्धालु सदस्य यह जानते है कि इन्होंने सरकार की सहायता से आर्य समाज को नष्ट करने हेतु उसके सर्वोच्च पद पर वलात् अधिकार किया हुआ है। गत अनेक वर्षो से ये वेद व वैदिक सिद्धान्तों से विरुद्ध सरकार में उच्च स्थान प्राप्त करने हेतु उसकी वोटलोभी आरक्षण, बाबरी–ढ़ांचा संरक्षण, समलैगिकता का समर्थन एवं कुरान के जेहादी मुस्लिम आतंकवाद का देव दयानन्द के सिद्धान्त के विरुद्ध समर्थन करते चले आ रहे हैं। जब आर्य समाज के विद्वान इससे व्यक्तिगत अथवा सार्वजनिक चर्चा हेतु ललकारते है तो यह गूंगों की तरह मौन हो जाते हैं।

दु:ख का विषय है कि जब वैदिक सिद्धान्तों से अनभिज्ञ साधारण धार्मिकजन इन्हें दूरदर्शन चैनल पर संन्यासी के वेश में देखते तथा आर्य समाज का नाम लेकर बोलते हुए सुनते है तो वे इनकी विचारधारा को आर्यसमाज की विचारधारा मान बैठते हैं। जबकि वास्तविक स्थिति यह है कि वेद व दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार आर्य समाज जातिवाद के आधार पर बने आरक्षण, विदेशी हमलावर बाबर द्वारा अयोध्या में लाखों आर्य खालसा हिन्दुओं का खून बहाकर राम मंदिर को ध्वस्त करके उस पर बनाये गए बाबरी ढ़ांचे, वेद के ब्रह्मचर्य सूक्त तथा देव दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश व संस्कार विधि से विरुद्ध 377 पर आधारित समलैगिकता, व्यभिचार व देव दयानन्द के कालजयी अमर ग्रन्थ के 13वें व 14वें समुल्लास अध्याय के विरुद्ध बाईबलीय पादरियों के चर्चीय पाखण्ड व इस्लामिक पर्सनल लॉ या आतंकवाद को नही मानता। आर्य समाज के वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार समान कानून संहिता धारा 44 के स्थान पर सम्प्रदाय आश्रित देश में चल रहे दो प्रकार के कानून भी निन्दित है। परन्तु अत्यन्त खेद का विषय है कि स्वामी अग्निवेश बिना वेद शास्त्र व देव दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश आदि का प्रमाण दिये अपनी मनमानी बातों को प्रचारित कर रहे हैं। कुछ स्वार्थी अथवा मूर्ख लोग उनका समर्थन भी कर देते हैं परन्तु ऐसे लोग भी बातचीत हेतु पुकारे जाने पर धीरे से पलायन कर जाते हैं।

आर्य समाज, देव दयानन्द व वैदिक धर्मप्रेमी लोग वेश सम्प्रदाय द्वारा सेंध लगाकर समाज में पाखण्ड व भ्रष्टाचार पनपाने के कार्यो से सदा सावधान रहें। ब्रह्मचर्य व वैदिक विवाह के स्थान पर यदि ये लोग समलैगिकता का समर्थन करते मिलें तो इनका घेराव करें एवं दयानन्द के सच्चे सिपाही बनकर मुंहतोड़ उत्तर दें। शर्म की बात है कि स्वामी अग्निवेश दिनांक 5 जुलाई 2009 समय लगभग 5 बजे दूरदर्शन चैनल पर एक मौलवी व पादरी के बीच में बैठकर समलैगिकता का समर्थन करते हुए वेद, देव दयानन्द व आर्य समाज को अपमानित कर रहे थे। कुरान की जन्नत में जेहादी आतंकवादियों हेतु गैरों को मारने पर लौण्डों का विधान है एवं बाईबल को मानने वाले गोरों में भी समलैंगिकता का व्यभिचार लगभग 115 देशो में व्याप्त है। बुद्धिजीवी यह बात भली भाति जानते हैं कि विश्व में एड्स जैसे अनेक गुप्त रोगों का मूल कारण समलैंगिकता ही है। खेद है कि संन्यासी का चोला पहनकर अग्निवेश वहां बैठे समलैंगिकों की प्रशंसा कर रहे थे और कह रहे थे कि "किसी लड़के का लड़के से मित्रता करने में क्या आपत्ति है? मैं इन लोगों के साथ 15 दिन से हूं, मुझे तो इन लोगो में कुछ भी बुराई नही दिखाई दी।" नादान अग्निवेश क्या यह नही जानते कि किसी लड़की की लड़की से मित्रता अथवा किसी लड़के की लड़के से मित्रता पर समाज में न कभी आपत्ति हुई है एवं न ही कभी हो सकती है। आपत्ति तो उनके परस्पर औरत मर्द जैसे रूप में किये जा रहे अनैतिक सैक्स सम्बन्धों की है। जिस में एक सैक्स करने वाला व दूसरा करवाने वाला बनकर रहता है। जहां समलैगिता को स्वीकृति है उन देशों में भी पति पत्नी में विवाद करवाकर न जाने कितने परिवार इस समलैगिकता ने बर्बाद किये है।

आई. पी. सी. की धारा 377 समलैंगिकता को अप्राकृतिक कहकर उसका प्रतिकार करने हेतु लगाई गई थी। स्त्री–पुरुष का पति पत्नी के रुप में संबंध एक प्राकृतिक संबंध है। यह सिद्ध होता है कि समलैंगिकता अप्राकृतिक है एवं वासनायुक्त अपराध है अत: इस पर प्रतिबन्ध लगा रहना चाहिए इससे समाज में अनैतिकता तथा अनेक रोगों की वृद्धि हो रही है। देश का युवा देश की उन्नति, सामाजिक सेवा व आत्मिक विकास से हटकर क्षणिक व्याभिचार के सुख हेतु जीवन की मूल्यवान जीवनी शक्ति, सम्पत्ति तथा समय को बर्बाद कर रहा है। जब समाज का बुद्धिजीवी चरित्रवान जन इसे चोरी, रिश्वत तथा मिलावटखोरी की तरह ही अनैतिक कहता है तो तब समलैंगिकता की वकालत करने वाले यह हेतू देते है कि यह अनैतिक इसलिए नही क्योंकि इसमें दोनों की सहमति होती है। यदि यही तर्क ठीक है तो फिर समाज के सड़ी हुई बुद्धिवाले जनों को दहेज लेना–देना, रिश्वत लेना देना, वेश्यावृत्ति करना, जुआ खेलना अथवा किसी भाई बहन व पिता पुत्री का परस्पर की रजामन्दी से अनैतिक कार्य करना आदि भी उचित माना जायेगा? फिर समलैंगिकता की तरह इन सब अपराधों में बनी हुई दण्ड की सारी धारायें भी हटानी पड़ेंगी।

कुछ लोग अज्ञानवशात् समलैंगिकता व्याभिचार का समर्थन करने हेतु इस बात की दुहाई देते हैं कि जो लोग समाज में ऐसा कर ही रहे हैं तो क्या उन्हें समाज से काटकर दूर कर दिया जाए? क्यों न उन्हें समाज के साथ जोड़ने हेतु 377 को हटाकर उन्हें भय–रहित करके समाज का अंग बनाया जाए? दिमागी दीवालियेपन की इस शंका का यह उत्तर है कि क्या चोरों, डकैतों, पिता–पुत्री व भाई बहन में अनैतिक सम्बन्ध करने वालों मिलावटखोरों, रिश्वत खोरों जुआरियों, स्मगलरों और आतंकवादियों को समाज के साथ के साथ जोड़ने हेतु उनके एसे अनैतिक कार्यो को वैधानिक मानकर उन्हें समाज से जोड़ने की प्रेरणा दी जाए? अथवा हमारी शैक्षणिक संस्थाओं, समाजसेवी संस्थाओं अथवा मीडियाजन ऐसे अनैतिक को उनके तथा समाज के लिए रोगकारी, गरिमा हीन एवं परिवार तथा राष्ट्र हेतु पतनकारी बताकर अनैतिकता से मुक्त करने का प्रयास करें। वास्तविकता यह है कि किसी भी व्यक्ति को अनैतिक पाप कर्म से बचा सकता है। सरकार इस विषय में गम्भीरता से विचार करे एवं देश को अनैतिकता से बचायें।

मुसलमानों के मंच पर मौलवियों सहित तथा इसाईयों के मंच पर किसी पादरी सहित प्रदर्शन अथवा व्याख्यान करते हुए यह व्यक्ति आम जनता को भ्रमित करने का प्रयास करता है जिससे कि साधारणजन यह मान बैठते है कि बाईबल व कुरान भी वेद के ही समान धार्मिक एवं मानवतावादी ग्रन्थ है। भारतीय संविधान की धारा 51 से विरुद्ध धरती को चपटा व सूर्य को इसके गिर्द धूमने वाला बताने वाले सब ग्रन्थ धर्म ग्रन्थ नहीं अपितु पाखण्ड हैं। एक वैदिक आचार्य भी किसी मौलवी या पादरी के समान ही गो–हत्या पर पीड़ित न होने वाला वैसा ही मांस–अण्डा–मछली भक्षक व विज्ञान विरुद्ध आचरणवाला व्यक्ति है। जबकि वास्तविकता यह है कि वैदिकधर्मी आर्य लोग संविधान की धारा 48 एवं मनुस्मृति धर्मशास्त्र के अनुसार गो–हत्या तथा मांस भक्षण को पाप व अपराध मानता है। वेश–सम्प्रदाय ने जहां भारत में ईसाई मुसलमानों के बाईबल कुरान का खण्डन के स्थान पर मण्डन करके मांसाहार व गो–हत्या को प्रोत्साहन दिया है। वेद, योग–दर्शन, व सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास के अहिंसा परमो धर्म के विरुद्ध प्रतिदिन अनेक प्राणियों की हत्या की जाती है एवं गर्भ गिराये जाते हैं।

अत्यन्त लज्जा का विषय है कि आर्य समाज के संस्थापजक जिस देव दयानन्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के 13वे 14वे समु0 में इन ग्रन्थों को विश्व में प्राणियों का हत्यारा तथा आतंकवाद फैलाने वाला माना है वेश सम्प्रदाय उसका वहां खण्डन के स्थान पर प्रचार कर रहा है।

शर्म की बात है कि स्वामी अग्निवेश ने समलैंगिकता आदि अनैतिक कार्यों की वकालत करते हुए यह कहा कि जैसे देव दयानन्द ने जाति–पाति, बाल–विवाह, अनमेल–विवाह को रोकने एवं नारियों के मान व विधवा विवाह को स्थापित करने हेतु आर्य समाज द्वारा आन्दोलन चलाये मैं भी समलैंगिकता को आन्दोलन द्वारा विरोधियों का मुंह बन्द करके अनैतिक माने जाने वाले लोगों को मान दिलवाऊंगा। देव दयानन्द व उसका आर्य समाज व्यक्ति, परिवार, समाज तथा देश को नैतिक उन्नति प्रदान करने हेतु आन्दोलन चलाता है परन्तु अत्यन्त खेद का विषय है कि अग्निवेश देव दयानन्द व आर्य समाज को अपमानित करता हुआ व्यभिचार को नैतिक मान्यता दिलवाने हेतु वैदिक सिद्धान्तों से विरुद्ध आन्दोलन आदि चलाने का प्रयास करना चाहता है । इस बात से यह नितान्त सिद्ध हो जाता है कि अग्निवेश सम्प्रदाय का वेद, देव दयानन्द और आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं है। न ही कोई धार्मिकजन दूरदर्शन आदि मीडिया पर आ जाने से एवं संन्यासियों जैसे रंग के वस्त्र पहनने मात्र से उन्हें ठीक मानने के भ्रम में न पड़ें।

– मानवेश पुरी,
पूर्व सैक्शन आफिसर, भारत सरकार

महामहिम राष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री को ज्ञापन देंगी भारत की हजारों आर्यसमाजें

धारा 377 के सम्बन्ध में सुप्रीम कोर्ट में अपील करे केन्द्र सरकार – आर्यसमाज की मांग

भारत की सभी आर्यसमाजों से सर्वदेशिक सभा की अपील है कि धारा 377 की हाईकोर्ट द्वारा दी गई व्याख्या के विरोध में विस्तृत माहौल पैदा करने हेतु भारत गणराज्य की महामहिम राष्ट्रपति महोदय एवं प्रधानमन्त्री भारत सरकार को पत्र भेजें जिसमें दिल्ली हाईकोर्ट के आदेश के विरोध में निन्दा प्रस्ताव पारित करते हुए इस सम्बन्ध में दिए गए फैसले के दुरुपयोग को रोकने के लिए उचित कदम उठाने, सुप्रीम कोर्ट में अपील करने तथा आवश्यकता पड़ने पर संवैधानिक कदम उठाने की मांग की गई हो। पत्रों की प्रति **सभामन्त्री, सार्वदेशिक सभा कैम्प कार्यालय – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली**– 110001 पर अवश्य भेजें।

– विनय आर्य, उपमन्त्री, सार्वदेशिक सभा

सत्यार्थ मुक्तक

सत्यार्थ प्रकाश से

"मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को जिन्होंने भारत वर्ष को अविद्या आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्तकर सत्य और पवित्रता की जागृति में ला खड़ा किया, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम।" – *रविन्द्र नाथ टैगोर*

"वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक (पहला शिक्षक) माता, दूसरा (शिक्षक) पिता और तीसरा (शिक्षक) आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य। वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्। जिसके माता और पिता धार्मिक और विद्वान हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं कर सकता। इसीलिए (मातृमान्) अर्थात् **'प्रशस्त धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्'**। धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे।"

(प्रथम समुल्लास)

सार्वदेशिक सभा प्रकरण

"आखिर क्यों नहीं होने देना चाहते कोर्ट द्वारा निष्पक्ष चुनाव?"

सार्वदेशिक सभा का विवाद अब पूर्ण रूप से माननीय तीन जजों की समिति के समक्ष निपटारे की ओर अग्रसर है और यह वास्तविकता है कि स्वामी अग्निवेश जी का पक्ष एवं श्री मिठाई लाल सिंह का पक्ष बिल्कुल नहीं चाहता कि प्रान्तीय सभओं के सम्बन्ध में संगठन को खराब करने के लिए जो समानान्तर सभाएं खड़ी की गई हैं, उनका सच सबके सामने आए। तीन जजों की समिति इसी निर्णय को करने में जुटी है। 7 सभाओं का निर्णय हो चुका है, जिसके कारण दोनों ही पक्षों को यह बात अच्छी तरह समझ में आ चुकी है कि यदि यह समिति आगे कार्य करती रही तो उनके गुट का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। इसलिए जब तीन जजों की समिति में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का केस गत 11 जुलाई, 09 को प्रस्तुत हुआ तो, दोनों ही पक्ष इस बात पर अड़ गए कि अब समिति कार्य नहीं करेगी क्योंकि छह मास पूरे हो चुके हैं। जबकि माननीय जज हाई कोर्ट दिल्ली ने इस समिति के कार्यों पर रोक लगाने सम्बन्धी श्री विमल वधावन की याचिका पर आदेश करते हुए स्पष्ट रूप से कहा था कि – "Election committee appointed by the Court vide order dated 11.12.2008 shall continue to discharge its functions, unhindered by the fact that the present application has been moved."

हिन्दी अनुवाद – "तीन सदस्यीय जजों की समिति निर्बाध रूप से चुनावी प्रक्रिया को आगे बढ़ाती रहे, बिना यह देखे कि श्री वधावन ने कोर्ट को दिए अपने प्रार्थनापत्र में क्या कहा है।"

इस आर्डर के बाद भी दोनो ही पक्षों ने कोर्ट की कार्यवाही चलने नहीं दी। अन्त में इसके लिए पुनः कैप्टन देवरत्न आर्य जी के पक्ष को कोर्ट में दरखास्त देनी पड़ी जिसका फैसला आना बाकी है। विचारणीय बात फिर वहीं पर है कि – "आखिर क्यों नहीं होने देना चाहते कोर्ट द्वारा निष्पक्ष चुनाव?"

भ्रान्ति निवारण

हाल ही में प्रकाशित वैदिक सार्वदेशिक में एक सार्वदेशिक सलाहकार समिति के कुछ नाम दिए गए हैं। जिनमें लगभग 30 नाम जिन सज्जनों के हैं उन्होंने पूर्ण रूप से अपने को इस कार्य से अलग करते हुए बताया कि हमारा इससे कोई लेना देना नहीं है और न ही हमारी जानकारी में इस प्रकार की किसी समिति का गठन हुआ है। यह नाम केवल आर्यजनता में भ्रम फैलाने की दृष्टि से दिए गए हैं।

जामिया मिलिया इस्लामिया में भी होगा वेद प्रचार

दिल्ली बुक फैस्टिवल

शनिवार 1 अगस्त से रविवार 8 अगस्त, 2009

जैसा कि सभा की नीति रही है, सार्वजनिक मेलों मे अधिक से अधिक प्रचार किया जाए। इसी के अन्तर्गत सभा निम्न आयोजन करने जा रही है। हमारा उद्देश्य है अधिक से अधिक नए महानुभावों तक आर्यसमाज के साहित्य को पहुंचाया जाए। इस स्टाल पर चारों वेद, महर्षि दयानन्दकृत साहित्य, विभिन्न भाषाओं के सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य वैदिक साहित्य प्रचारार्थ बिक्री हेतु विशेष छूट के साथ रखा जाएगा। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर इस कार्य में सम्बल प्रदान करें। हॉल एवं स्टाल नं. अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। इस कार्य में जो स्वयंसेवी कार्यकर्ता सहयोग देना चाहें उनका हार्दिक स्वागत है। समयदानी कार्यकर्ता श्री सुखबीर सिंह आर्य 9350502175 से सम्पर्क करें।

– रमेशचन्द्र आर्य (9868242404) महेन्द्र सिंह आर्य

डॉ. उत्तमायति जी की वेद प्रचार यात्रा –5

द० तथा उ० अमेरिका के देशों में कर रहीं हैं प्रचार

गतांक से आगे :–

मैंने अपना संस्मरण सुनाया कि जब मै गुयाना आ रही थी तो हर व्यक्ति यही कहता था You are going to Guyana but be careful Guyana is a very dangerous country. यहां तक कि न्यूयॉर्क एयर पोर्ट पर भी एक नौजवान मेरा पासपोर्ट चैक करते हुए बोला - You came from India. I said yes, then he told,be careful, Guyana is a very dangerous country. लेकिन मैंने तो डरना जैसे सीखा ही नहीं था। मैने कहा लोग करोड़ो रू० खर्च करके बॉडी गार्ड रखते हैं तो क्या वे मरते नहीं है। हाँ मैंने भी एक बॉडीगार्ड रख रखा है – मेरा प्रभु वह परम पिता परमात्मा। यही कारण है कि मैं अकेली अपने देश से आप लोगों के यहां आ गई। मैं सुबह 5 बजे उठकर अकेली समुद्रके किनारे सैर भी करने जाती हूँ। मुझे नहीं पता कि क्यों लोगों ने गुयाना के लिए ऐसे विचार रखें। इसी प्रकार कोई 45 मिनट तक महिलाओं को उनके अन्दर की दैवी शाक्तियों को जागृत करने पर बोलती रहीं। महिलाएं एकदम शांत भाव से सुन रहीं थीं।

अंत में जब वहां की प्रधाना धन्यवाद करने उठी तो जो शब्द उन्होंने कहें मेरे लिए तो क्या आर्यजाति के गौरव की बात थी। हम पिछले कई वर्षो से नवरात्र मनाते आ रहे है परन्तु इस बार का नवरात्र हमारे लिए विशेष है क्योंकि हमें ऐसा लग रहा है जैसे साक्षात दुर्गा आज हमारे मंदिर में आ गई है। लोग इतने प्रभावित हुए कि पूरे सप्ताह में वहां कार्यक्रम के अनुसार एक प्रवचन था सब बोले हमें एक दिन और सुनना हैं। फिर बुधवार को गई। बुधवार फिर लोगों का मन नही भरा, करीब 400 महिलाऐं एवं पुरूष कार्यक्रम के अंत में फिर चिल्लाएं– We want one more day. मैंने अपनी असमर्थता बताई – लेकिन नही माने बोले शनिवार नवरात्रों का अंतिम दिन है। आप उसदिन अवश्य आएं। फिर अंतिम दिन वेद मंत्र से प्रारंभ किया–वेद नारी को क्या बताता है –

'अहंकेतुरहं मूर्धाऽहमुग्रा विवाचनी'

(ऋ .10– 159–5)

इस मंत्र की 45 मिनट खूब जोर शोर से व्याख्या की तथा अंत में स्वरचित एक गीत – जागो री जागो री जागो– जागो री बहना सारी उमर गई अज्ञान में अब तो आंखे खोलो री बहना। खूब बहनों ने ताली बजा–बजा कर साथ गागाकर साथ दिया –अंतिम दिन भी वहां प्रधान जी के यही उद्‌गार थे कि इस वर्ष का हमारा नवरात्र अत्यन्त सफल हो गया क्योंकि साक्षात माँ दुर्गा हमारे मंदिर में आ गई है।

लेकिन कभी–कभी बहुत ज्यादा हो जाता था। 4–5 योग कक्षाएं लेना फिर मंदिर में प्रवचन पुनः आर्य समाज में प्रवचन इन सब का श्रेय जाता है वहां के कर्मठ कार्यकर्ता डॉ० रमेश सुग्रीव जी को जो 4.30 शाम अपनी क्लिनिक बंद करके अपनी कार में हारमोनियम –विडियों कैमरा आदि रख मुझे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे। उन्होंने मेरा हर प्रवचन रिकार्ड किया।

कहीं मैंने आचमन के मंत्रों की व्याख्या की तो कहीं गायत्री मंत्र, कही स्वस्तिपंथा मनुचरेम सूर्या, कहीं विश्वानिदेव, कहीं गीता के श्लोक पर बोला, कभी सनातन धर्म, मंदिरों में श्री राम को लेकर चर्चा की। इस तरह सभी प्रवचन रिकार्ड किये तथा मेरे यहां आने के बाद जो वहां का 'वेदो की वाणी टीवी.कार्यक्रम है, उसमें ये लगातार प्रसारित हो रहे हैं।

यही नहीं मेरे भजन भी वहां के लोगों को एकदम नये लगे तो डॉ.सुग्रीव ने अपने घर में ही एक कमरें में पूरा रिकार्डिंग रूम बना रखा है पेशे से एक सफल एम. डी. सर्जन डॉ0 हैं तो साथ ही संगीत के दिवाने भी खुद भी बेहद सुन्दर गाते हैं।

– क्रमशः

प्रचार यात्रा वृतान्त

आचार्य ज्ञानेश्वर जी की दक्षिण अफ्रीका में

विशेष नोट : – प्रस्तुत रिपोतार्ज इसलिए प्रकाशित की जा रही है ताकि जिन–जिन देशों में आर्यसमाज कार्य कर रहे हैं वहां–वहां की वर्तमान सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के सम्बन्ध में आर्यजनों को यथावत जानकारी रहे और इनके अनुरुप प्रचार की योजनाएं बनाई जा सकें। – ***सम्पादक***

पिछले मास की 21 वे दिनांक को अहमदाबाद से चलकर कतार (अरब) होता हुआ यहां पहुंचा। यहां के एक मंदिर सेंटन हिन्दू समाज तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रिका ने मुझे प्रचारार्थ आमंत्रित किया था।

यह देश प्राकृतिक सम्पदा की दृष्टि से सम्पन्न है। हीरा, सोना, प्लेटिनम, क्रोम, तांबा आदि मूल्यवान धातुएं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। साथ ही पशु पक्षियों से भरा हुआ हरा–भरा प्रदेश रमणीय है। कुल तापमान 2 डिग्री था, ठण्ड बहुत हैं।

400–500 वर्ष पूर्व यह देश अत्यन्त पिछडा था। यूरोपीय देशों विशेषकर फ्रांस,डच, पूर्तगाल, जर्मनी, ईग्लैण्ड आदि, के साहसी लोग यहां पर आये घूमे, देखा और पाया कि यहां तो माल ही माल है। यहां के मूल नंगे जंगली, मूर्ख निवासियों को धन, बल, छल, कपट, भय, आदि के माध्यम से परास्त कर दिया और स्वयं राजा बन गये। प्राकृतिक खनिजों का दोहन करने के लिए व्यक्ति भी चाहिए थे। अतः भारत आदि अपने अधीन ऐशियायी देशो से जहाजों में भरकर मजदूर मंगवाये जैसा कि संसार में होता आया है। बलवान, बुद्धिमान, धनवान, संगठित, चतुर, चालाक, स्वार्थी लोग मूर्ख, निर्बल निर्धन, आलसी, असंगठित लोगों पर अन्याय, अत्याचार,शोषण, पक्षपात करते है, वैसा ही यहां पर किया। किन्तु अति स्वार्थी, लोभी, नास्तिक व्यक्ति मानवता की सीमाओं को लांघ देता है, वैसा ही यहां पर उन गोरों ने किया।

किसी अनजान, पराये घर में प्रवेश करके, मेहमान बनकर, फिर व्यापार की शुरुआत करके दूसरों की कमजोरी का लाभ उठाकर, फूट डालकर, छल कपट से उसी की सम्पति का मालिक बन जाना तथा वास्तविक मालिक को गुलाम बना लेना कितना घिनौना कार्य है। इन यूरोपीय लोगों ने पिछले 300 –400 वर्षो में न केवल अफ्रिका के अपितु सम्पूर्ण विश्व में जहां जहां इनको अवसर मिला ऐसा ही किया। यह कटु सत्य है।

देखने में सुन्दर, बोलने में मीठे, व्यवहार में दक्ष, इन गोरे लोगों ने अपनी एषणाओं की पूर्ति के लिए, इन काले लोगो पर कितना क्रूरतम अत्याचार किया, कितना शोषण किया, कितना पक्षपात किया, इनकी जानकारी प्राप्त करनी हो तो यहां के इतिहास को देखे। ऊंच नीच की भावना, रंग–भेद इनसे अधिक हिंसक होगे? पशुओं में भी इतनी उग्रता नहीं होती।

विशेषकर सभ्य, शिक्षित, धार्मिक सुसंस्कृत उन्नत कहलाने वाले जब ऐसे घिनौने, मानवता को लजाने वाले, शर्मनाक पाप कार्य करते हैं तो पशु भी उत्तम कहलाते हैं। आततायी दुःशासनों की शक्ति भी क्षीण होती है। उनका भी जीवन काल समाप्त होता है, शासित व्यक्तियों के भी दिन आते है। एक दिन वे विजयी होते है।

मेरी यह बारहवीं विदेश यात्रा है। अफ्रिका महाद्वीप में इससे पूर्व 2005 में आया था। केन्या, तांजानिया आदि पूर्वी अफ्रिका के कुछ देशों में प्रचारार्थ आया हूँ।

– शेष अगले अंक में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग के तत्त्वावधान में

आर्य उपदेशकों की अत्यावश्यक बैठक

आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संगों की प्रक्रियाओं पर विस्तार से विचार करने, उन्हें आम आर्यजनों की दृष्टि से उपयोगी बनाने तथा उन प्रवचनों को क्रमबद्ध करने की दृष्टि से दिल्ली के उन सभी उपदेशक महानुभावों की बैठक आयोजित की गई है जो अपने वक्तृत्व एवं विद्वत्ता से आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संगों में प्रवचनों के साप्ताहिक सत्संगों में प्रवचनों का दायित्व पूरा कर रहे हैं। कुछ ऐसे विषय भी विचारणीय होंगे जिन पर आज विचार बहुत आवश्यक है कि वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार को तीव्रगति प्रदान करने के लिए, महर्षि के दिव्य संकल्पों को तीव्रता से आकार प्रदान करने के लिए आपके अमूल्य अनुभवपूर्ण सुझावों की अत्यावश्यकता है। जैसे आप सुविज्ञों को विदित है कि श्रावणी उपाकर्म समीप ही है। इस अवसर पर किसी सार्थक प्रचार नीति, योजना होनी ही चाहिए। इस सन्दर्भ में वेदप्रचार विभाग, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक बैठक का निर्णय लिया। अतः सभी माननीय उपदेशकों से प्रार्थना है कि निर्धारित समयानुसार पधार कर अपने अमूल्य परामर्श से आर्यत्व को लाभान्वित करें।

बैठक की तिथि – 26 जुलाई 2009 (रविवार)
समय – सायं 4:00 बजे
स्थान – आर्य समाज मंदिर, करोल बाग

ध्यातव्यः समय (4:00बजे) का पूरा ध्यान रखते हुए, समय पर पधारकर अपने निष्ठापूर्ण आर्यत्व का परिचय दें।

– आचार्य खुशीराम, अधिष्ठाता, वेद प्रचार विभाग, दिल्ली आ. प्र. सभा

वैवाहिक विज्ञापन – विशेष–सूचना

महर्षि दयानन्द जी की यह दृढ़ मान्यता है कि विवाह हमेशा सदृश अर्थात् परस्पर समान गुण, कर्म, स्वभाव वालों का ही होना चाहिए। क्योंकि ऐसे विवाह से ही कुल में प्रसन्नता रहती है और उसी कुल में आनन्द, लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है।

आज हमारे पारिवारिक अशान्ति ,कलह, दुःख और वैमनस्य का मूल कारण महर्षि के इस वचन का पालन न करना ही है। महर्षि ने तो मनु के प्रमाण से बलपूर्वक यहाँ तक कह दिया कि "चाहे लड़का–लड़की मरणपर्यन्त कुमार (अविवाहित) रहें परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण, कर्म, स्वभाववालों का विवाह कभी न होना चाहिए।"

अतः सुख, शान्ति प्रसन्नता और आनन्द चाहने वालों का परम कर्तव्य है कि वे ऋषियों के निर्देश का पालन करते हुए गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार परस्पर विवाह रचायें।

इधर काफी दिनों से देश विदेश के कतिपय आर्य परिवारों की यह मांग रही है कि आर्य संदेश में वैवाहिक विज्ञापन का स्थायी स्तंभ प्रारंभ किया जाये, जिससे कि आर्य परिवारों को श्रेष्ठ, सुशील, निर्व्यसनी शाकाहारी, धार्मिक वर अथवा वधू के चयन में अत्यन्त सुगमता हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अब 'आर्य संन्देश' में वैवाहिक विज्ञापन सेवा प्रारंभ की जा रही है। सभी आर्य जनों से निवेदन है कि इस सेवा का लाभ उठाकर अपने सुखमय परिवार की आधार शिला बनावें।

ध्यान दें:– 'आर्य सन्देश' में अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित करने के लिए विज्ञापन में 'जाति बन्धन नहीं', और 'आर्य वर/आर्य कन्या की आवश्यकता है' ऐसा देना अनिवार्य है। एक अंक के लिए निर्धारित विज्ञापन शुल्क 150/–, दो अंक के लिए 200 तथा लगतार तीन अंकों के लिए 300/– रुपये देय होगा।

– सम्पादक

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार– 249405 (उत्तराखण्ड)

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार में दि. 08 जुलाई 2009 से गुरुकुलीय परम्परागत पाठ्यक्रमों में कक्षा 6, 7, 8, 9, 11, 13 में प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। योगाचार्य, पी. जी. डिप्लोमा इन यौगिक साइंस, एम. ए. (संस्कृत) की शिक्षा, एन. एस. एस. एवं स्काउटिंग की भी व्यवस्था है। प्रवेश 31 जुलाई 2009 तक होगें। प्रवेश हेतु प्रधानाचार्य से सम्पर्क करें –

01334–254295, 255377, 9897283703, 9219406077

स्त्री आर्यसमाज आनन्द निकेतन के भवन का उद्घाटन

दिनांक 14.04.2009 को सी/13 आनन्द निकेतन, नई दिल्ली में आर्य समाज का उद्घाटन भव्य समारोह एवं सत्संग के साथ सम्पन्न हुआ। यह भवन श्रीमती राजदुलारी ने आर्य समाज के सत्संग, यज्ञ आदि करने के लिये दान दिया है। इसकी प्रेरणा स्त्रोत श्रीमती चन्द्र सेठी है जिनके निरन्तर प्रयास और प्रेरणा का यह सुन्दर कार्य है। आनन्द निकेतन एवं शान्ति निकेतन में पिछले 40वर्षो से पारिवारिक सत्संग प्रत्येक मगंलवार को प्रातः 11 से 1 बजे तक चल रहा है।

इस समाज के उद्घाटन समारोह मे आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा एवं आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने मिलकर यज्ञ कराया और प्रवचन किये।

जब मंगलवार को अपने घर में कोई सत्संग नहीं कराता तब उस मंगलवार को सत्संग सी–13, आनन्द निकेतन मे होता है। उद्घाटन समारोह जलपान के पश्चात सम्पन्न हुआ।

– श्रीमती चन्द्र सेठी, प्रधान

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर
स्वामी सत्यानन्दकृत महर्षि दयानन्द जीवनी

श्रीमद्दयानन्द प्रकाश

~~रु. 200~~ **मात्र 125/-रु०**

सुन्दर कम्पोजिंग, आकर्षक रंगीन कवर, बड़ा साईज 450 पृष्ठों में
यह छूट महर्षि निर्वाणोत्सव (दीपावली) तक ही मान्य होगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ

सत्यार्थ-प्रकाश

प्राप्त करें मात्र 25/- में

(2500/- रुपये सैंकड़ा)
सुन्दर कम्पोजिंग, आकर्षक रंगीन कवर में प्रकाशित

चारों वेदों का सम्पूर्ण वेद-भाष्य

(हिन्दी 4 व 14 खण्डों एवं दो विभिन्न आकारों में) **मात्र 1500/-रु०**

(अंग्रेजी 22 खण्डों में) **मात्र 2000/-रु०**

आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, दैनिक हवन कर्ताओं के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

अब सभा कार्यालय में भी उपलब्ध

अनेक जड़ीबूटियों व औषधियों से तैयार सुगन्धित हवन सामग्री अब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में 5, 10 एवं 20 किलो के पैक में उपलब्ध है। आर्यसमाजें अपनी आवश्यकतानुसार मंगाएं और विशुद्ध हवन सामग्री से यज्ञ करके वातावरण को सुगन्धि प्रदान करें।

5 किलो - 250 रुपये तथा 10 किलो - 490 रुपये

आर्यजनता की भारी मांग पर सभा द्वारा पुनः प्रकाशन

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित
छह सुन्दर डिजाइनों में
केवल मात्र 200/- रुपये सैंकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

सार्वदेशिक सभा के शताब्दी वर्ष समारोह पर सभा प्रधान कै. देवरत्न आर्य की घोषणा

महर्षि दयानन्द सरस्वती (कॉमिक्स)

भारत में कहीं भी 500 से अधिक प्रतियां मंगाने पर डाक व्यय नहीं लिया जाएगा। अधिक से अधिक संख्या में मंगवाकर प्रचार करें।
योजना मात्र 31 अगस्त, 2009 तक मान्य। मूल्य : 12/-

प्राप्ति-स्थान : - वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन

रविवार 26 जुलाई, 2009 प्रातः 10 बजे

स्थान : आर्यसमाज पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली

गत अंक में गलती से पूर्वी पंजाबी बाग छप गया था। कृपया इसे पश्चिमी पंजाबी बाग ही समझें। आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन उपरोक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है। अधिवेशन में गत वर्ष की गतिविधियों, आय–व्यय का वार्षिक विवरण एवं आगामी योजनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की जाएगी। दल से सम्बन्धित महानुभावों, सभी सभाओं के सदस्यों, अधिकारियों तथा सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से अनुरोध है कि आर्यसमाज की युवा इकाई के कार्यों से परिचित होने तथा इसके विकासात्मक कार्यों में सहयोग देने हेतु वार्षिक अधिवेशन में अवश्य उपस्थित हों। *– सुन्दर आर्य, महामन्त्री*

खुशखबरी! खुशखबरी!! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) को आयकर छूट प्रमाण–पत्र (८०जी) प्राप्त

सभी आर्यजनों को सहर्ष सूचित किया जाता है अनेक सेवा प्रकल्पों में सदा गतिशील रहनेवाली **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** को उसके जनहित सेवा प्रकल्पों को देखते हुए आयकर विभाग द्वारा आयकर अधिनियम की धारा ८०जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत अब सभी दानदाताओं को उनकी दानराशि पर आयकर में छूट मिलेगी।

सभी आर्यजन सभा के इन कल्याणकारी सेवा प्रकल्पों में अधिकाधिक दान देकर/दिलवाकर इस छूट का लाभ उठाएं। *– विनय आर्य, महामन्त्री*

आर्यसमाज एल ब्लाक, हरिनगर में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साहित्य प्रचार की शाखा आरम्भ

आर्यसमाज एल ब्लाक, आनन्द विहार हरि नगर, नई दिल्ली में सभा के बिक्री विभाग की एक शाखा के रूप में वैदिक साहित्य प्रचार एवं बिक्री केन्द्र की स्थापना की गई है। इस केन्द्र पर हवन सामग्री, महर्षि दयानन्द कॉमिक्स, शगुन लिफाफे, वैदिक सत्संग गुटका, वेदों के सैट, सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य महर्षि दयानन्दकृत सत्साहित्य प्रचारार्थ बिक्री हेतु उपलब्ध है।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज घौंडा, दिल्ली– 53

प्रधान : श्री अजब सिंह
मन्त्री : श्री ओम प्रकाश गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल

आर्यसमाज खिचड़ीपुर कालोनी, दिल्ली – 110091

प्रधान : श्री हरीश शर्मा
मन्त्री : श्री अजय कुमार गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्री गिरीराज शर्मा

आर्यसमाज ग्रीन पार्क, नई दिल्ली

प्रधान : श्री विद्यामित्र ठुकराल
मन्त्री : श्रीमती प्रभुशरणिता
कोषाध्यक्ष : श्री आदर्श कपूर

आर्यसमाज सै.–13, रोहिणी, दिल्ली

प्रधान : श्री आर. एल. छाबड़ा
मन्त्री : श्री वेद प्रकाश बिबलानी
कोषाध्यक्ष : डॉ. बेताब अलीपुरी

स्त्री आर्यसमाज सै.13, रोहिणी दिल्ली

प्रधान : श्रीमती पुष्पा देवी
मन्त्री : श्रीमती आशा गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्रीमती जयदेवी

ARYA FINANCIAL
An Investment Advisory Co.
Life Insurance
Mutual Fund
General Insurance
Tax Planning

* LIC का पेंशन प्लान अपनाएं, बुढ़ापा मजबूर नहीं मजबूत बनाएं। ★ बच्चों की शिक्षा कैरियर शादी आदि का इन्तजाम करें छोटी बचत में बड़ा काम करें। *Make our child Crorpati, Get Rs. 1.25 Crore by investing Just Rs. 2000/-* P.M. only for 25 Years (SIP in Mutual Fund) * ELSS द्वारा निवेश करें टैक्स बचाए साथ ही अधिक मुनाफा कमाएं। ★ अपनी व अपने परिवार की हैल्थ इंश्योरेंश (मेडीक्लेम) कर अचानक होने वाली बीमारी के खर्च से बचें। ★ सभी प्रकार के Mutual Fund में निवेश की सुविधा। ★ निवेशक होने के लिए धनवान होना आवश्यक नहीं किन्तु धनवान होने के लिए निवेशक होना जरुरी है।

Dharamvir Arya (Financial Advisor)
(Certified IRDA & AMFI)
Off. LIC 33B, Distt. Centre, Janak Puri, New Delhi -58, Mob. 9810216281
Email: aryalic2007@rediffmail.com

पुरोहित की आवश्यकता

वैदिक संस्कृति के प्रचार व प्रसार हेतु आर्यसमाज गांव तुगलकाबाद नई दिल्ली को सुचारु रूप से संचालित करने हेतु एक पुरोहित की आवश्यकता है। संन्यासी/ वानप्रस्थ को वरीयता दी जाएगी। सम्पर्क करें –

– भगवतसिंह, मन्त्री
आर्यसमाज तुगलकाबाद, नई दिल्ली–44, मो. 9958400031

मुस्लिम बालकों ने भी पढ़ा वैदिक संस्कृति का पाठ

नवलखा महल, गुलाब बाग उदयपुर स्थित माता लीलावन्ती सभागार मे त्रिदिवसीय वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण शिविर दिनांक 20 जून से 22 जून तक आयोजित किया गया, जिसमें उदयपुर के अतिरिक्त छोटी सादड़ी, फतहनगर, सनवाड़, चित्तौड़ एवं उदयपुर के अस्सी बालक बालिकाओं ने भाग लिया। इनमें चार मुस्लिम शिविर में बालकों की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

शिविर में बालकों को विविध विषयों की जानकारी से युक्त दिनचर्या का अभ्यास करवाया गया जिसमें योग, यज्ञ, शुद्ध मंत्रोच्चारण, व्यायाम आदि के अतिरिक्त मुख्यतः निम्न विषयों पर उद्‌बोधन प्रदान किया गयाः–

1. माता पिता व आचार्य का जीवन में स्थान। 2. शारीरिक मानसिक व आत्मिक उन्नति। 3. पर्यावरण संरक्षण। 4. जीवन में अध्यात्म का महत्व। 5. विज्ञान मानव कल्याण के लिए। 6. अन्धविश्वास निवारण।

इन सभी विषयों को सत्यार्थ प्रकाश के संदर्भ में पढाया गया। विशेषज्ञ अतिथियों ने भी निम्न उद्‌बोधन दिएः–

1. जीवन में अनुशासन का महत्व। 2. हम मित्र किस प्रकार व किस प्रकार के बनावें। 3. हमारा स्वर्णिम इतिहास।

माता लीलावन्ती सभागार में आयोजित यह शिविर अत्यन्त सफल और उपादेय रहा। बच्चों की रुचि और जिज्ञासा उच्च कोटि की रही। सभी बच्चों ने नियमित दिनचर्या का पालन करते हुए माता पिता के चरण स्पर्श, गायत्री मंत्र का पाठ की प्रतिज्ञाएं लेते हुए आगामी शिविरों में भी भाग लेने की उत्कट इच्छा प्रकट की। *– अशोक आर्य, का. अध्यक्ष*

सनातन हनुमान मंदिर सागर पुर में श्रावणी पर्व सम्पन्न

9, 10, 11 जुलाई 2009 को सनातन हनुमान मंदिर सागर पुर में पवित्र श्रावणी पर्व को प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने आचार्य ब्र. राजसिंह आर्य के मुखारविन्द से पवित्र गायत्री का जप एवं उसके लाभ सभी माताओं एवं भद्र पुरुषों का अत्यन्त रोचक एवं सरल ढंग से समझाए। साधना का स्वरुप भी योगदर्शन के माध्यम से बताया। युवा संगीतज्ञ एवं भजनोपदेशक पं. राजवीर शास्त्री के मधुर भजनों ने सबका मन मोह लिया। *– विद्यावती आर्या, प्रधान*

शहीद मदनलाल ढ़ींगरा बलिदान शताब्दी 17 अगस्त 09 को

महर्षि दयानन्द के परम् शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा की लन्दन स्थित "इंण्डिया हाऊस" के प्रमुख कार्यकर्त्ता व महान देशभक्त मदन लाल ढ़ीगरा की बलिदान शताब्दी 17 अगस्त 2009 को धूमधाम से मनाई जायेगी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने बताया की वे लन्दन में उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए लक्षित युवक शिक्षा विद्, पत्रकार श्याम जी कृष्ण वर्मा के सान्निध्य में क्रान्तिकारी बन गये। अंग्रेज क्रूर अधिकारी कर्जन वायली की हत्या करके देश के लिए बलिदान हो गये। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनके बलिदान की याद बनाए रखें। *– चन्द्र मोहन आर्य, पत्रकार*

शोक समाचार

श्री वीरेन्द्र कुमार मल्होत्रा को मातृशोक

आर्य समाज 'एल' ब्लॉक आनन्द विहार हरिनगर के प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार मल्होत्रा की पूज्य माताजी एवं समाज की संस्थापक सदस्यों में से एक श्रीमती राम प्यारी मल्होत्रा धर्म पत्नी स्व. श्री कस्तूरीलाल मल्होत्रा संस्थापक प्रधान आर्य समाज 'एल' ब्लॉक का 29 जून,09 को 95 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया, उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से स्थानीय श्मशान घाट में किया गया। माताजी गत तीस वर्ष से रोग पीड़ित थी परन्तु उसकी परवाह न करते हुये समाज की गतिविधियों में निरन्तर सम्मिलित होती रहीं और सभी को आर्यसमाज की गतिविधियों में शामिल होने को प्रोत्साहित करती थीं और यज्ञ से कभी विमुख नही होती थी। वे अपने पीछे पुत्र पौत्र व प्रपौत्रों से भरापूरा परिवार छोड़ गयी। माताजी धैर्य की प्रतिमूर्ति थीं एवं कर्मठता की प्रतीक थी अन्तिम समय तक भी उनकी आर्य समाज में आने की ललक उनके मन से नही गयी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्‌गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

करबद्ध क्षमाप्रार्थी हैं! *खेद है कि साप्ताहिक आर्यसन्देश के गत अंक दिनांक 6 जुलाई से 12 जुलाई, 2009 के पृष्ठ 7 पर प्रकाशित **राष्ट्रीय गोरक्षा सम्मेलन** की सूचना में सम्पादकीय चूक के कारण 'गौ हत्या के समर्थक एवं गौ रक्षा बन्द कराने के लिए' प्रकाशित हो गया। कृपया इसे सुधारकर **'गौरक्षा के समर्थक एवं गौहत्या बन्द कराने के लिए'** पढ़ा जाए। सूचना में प्रकाशित इस बड़ी चूक के लिए समस्त सम्पादक मंडल करबद्ध क्षमाप्रार्थी है। – **सम्पादक***

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

13 जुलाई, 2009 से 19 जुलाई 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १६/१७-०७-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,

विद्यार्थियों के लिए विशेष योजना

विद्यालयों के बच्चों को पढ़ाइए महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र आपके बच्चों को मिल सकते हैं

5,00,000 रु० तक के इनाम

आज ही मंगवाएं

दिल्ली सभा कार्यालय – 15, हनुमान रोड नई दिल्ली : मूल्य मात्र 12/-

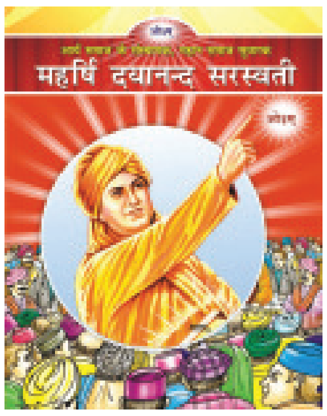

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने एवं परिवार के साथ जोड़ने के लिए तैयार कराई गई है कॉमिक्स। ये कॉमिक्स हिन्दी में तैयार कराई गई हैं।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र को बच्चों तक पहुंचाने के लिए यह एक सुविचारित योजना है। इनको बच्चों तक पहुंचाने के लिए कुछ सुझाव निम्न हैं :–

1. आर्यसमाज के आयोजनों पर बच्चों को नि:शुल्क वितरण करें। 2. निकटवर्ती विद्यालयों में जाकर इस योजना के बारे मे बताएं तथा उन्हें खरीदने के लिए प्ररित करें। 3. अपने पारिवारिक उत्सवों के अवसर पर जैसे – बच्चों का जन्मदिन, विवाह, वर्षगांठ के अवसर पर आने वाले बच्चों को भेंट करें। 4. बच्चों की प्रतियोगिताएं आयोजित करवाकर पुरस्कार के रूप में इनका वितरण करें। 5. जो आर्यसमाज के विद्यालय संचालित कर रहे हैं, वे प्रत्येक बच्चे तक इस कॉमिक्स को अवश्य ही पहुंचाएं। 6. सैम्पल मंगाने के लिए आज ही लिखें। सैम्पल वीपीपी द्वारा भेजे जाएंगे। मूल्य : 12 रुपये मात्र

विशेष नोट :
आवश्यक नहीं कि इनामों के लिए प्रविष्टियां अलग–अलग भेजी जाएं। आप चाहें तो कई प्रविष्टियां एक साथ भेज सकते हैं।

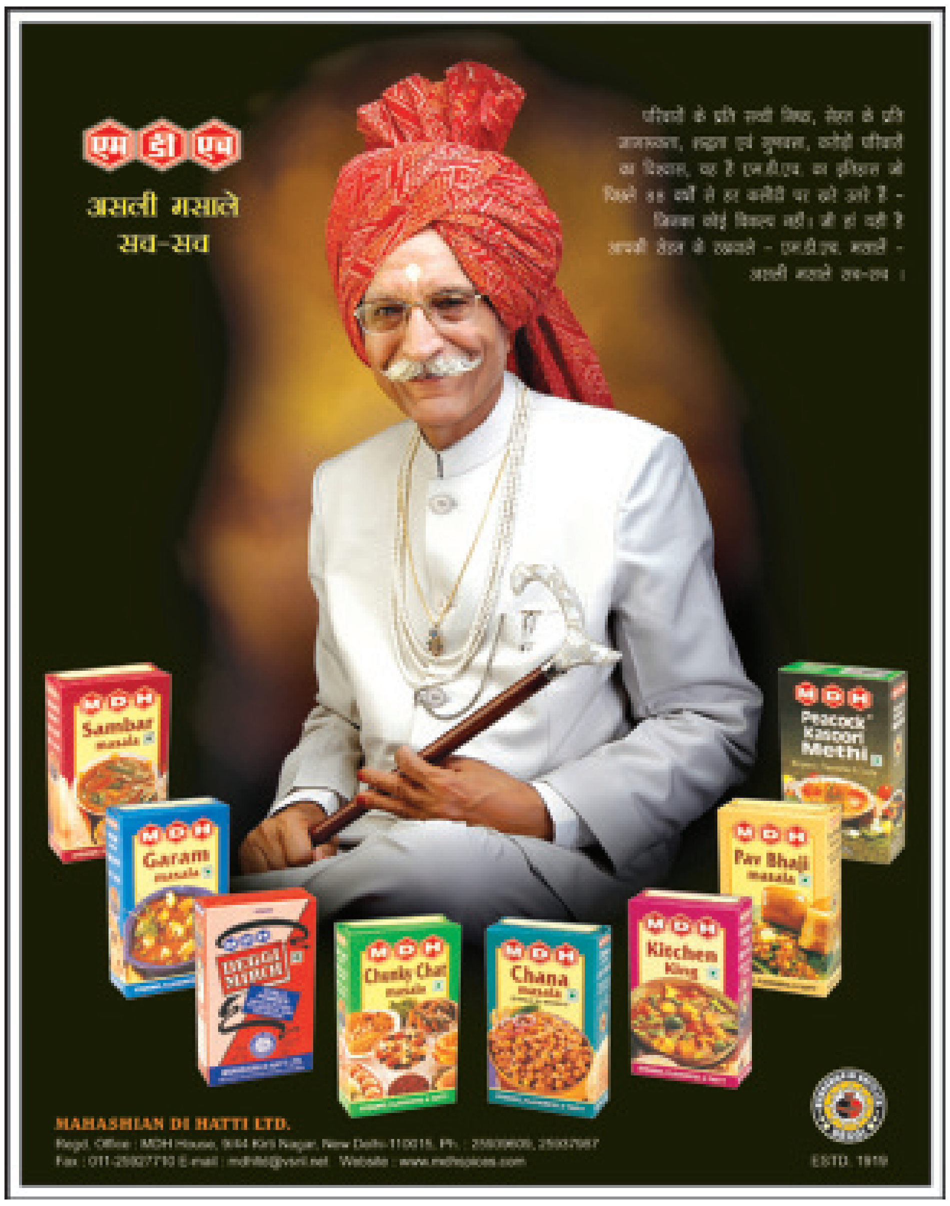

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : डॉ० ओमप्रकाश भटनागर